T.T. Kaushal Kumar
B.A. II (H) III

Sugar

Page No 4
Date

कि उत्पादन इकाइयों को माल के स्रोत के समीप की स्थिति को परिणामत! नई उत्पादन इकाइयों को गन्ना उत्पन्न करने वाले ग राज्यों में ही स्थापित करने के प्रयास किये गये। इसके फलस्वरूप 1960-61 की तुलना में 1980-81 में कुल उत्पादन में उत्तर प्रदेश और बिहार का 60 भाग प्रतिशत से कम होकर 38 प्रतिशत रह गया।

राज्यवार चीनी का उत्पादन (लाख टन)

राज्य	2003-04	2006-7
महाराष्ट्र	31.75 (23.4)	90.95 (32.1)
उत्तर प्रदेश	45.52 (33.6)	84.75 (29.9)
कर्नाटक	11.16 (8.2)	26.60 (9.4)
तमिलनाडु**	07.41 (6.9)	25.71 (9.1)
आन्ध्र प्रदेश	08.46 (6.5)	16.80 (5.9)
गुजरात	10.66 (7.9)	14.17 (5.0)
हरियाणा	05.82 (4.3)	6.52 (2.3)
उत्तरांचल	3.87 (2.9)	5.35 (1.9)
पंजाब	3.90 (2.9)	4.86 (1.7)
बिहार	2.74 (2.0)	4.51 (1.6)
मध्य प्रदेश*	1.16 (0.8)	1.83 (0.6)
अन्य	0.67 (0.5)	0.95 (0.3)
अखिल भारत	135.46 (100.0)	283.00 (100.0)

ये आकड़े चीनी के मौसम (अक्टूबर - सितम्बर) के अनुसार है। और 2006-07 में राज्यों में उत्पादन के घटते हुए क्रम में दर्शाए गये हैं।

* इसमें छत्तीसगढ़ शामिल है

** इसमे पांडिचेरी शामिल है।

ब्रैकेट मे दिये गये आकड़े भारत में कुल उत्पादन का प्रतिशत है।

Sugar

Page No.
Date

चीनी के उत्पादन के राज्यवार ढांचे से पता चलता है कि जहाँ 2003-04 में प्रथम स्थान उत्तर प्रदेश को प्राप्त था, 2006-07 में महाराष्ट्र ने प्रथम स्थान ले लिया। 2006-07 में दो राज्यों महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश द्वारा कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत उपलब्ध कराया गया। यदि इनमें कर्नाटक एवं तमिलनाडु जोड़ दिये जाएं, तो ये चार राज्य अर्थात महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक एवं तमिलनाडु चीनी के उत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत उपलब्ध कराते हैं।

एक और ध्यान देने योग्य बात है कि चीनी का उत्पादन जो 2003-04 में 135 लाख टन था बढ़कर 2006-07 में 288 लाख टन हो गया अर्थात उक्त तीन वर्षों के दौरान 100 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई।

सहकारी क्षेत्र का कार्यभाग :— हाल ही के वर्षों में चीनी उद्योग के सहकारी क्षेत्र के महत्व में वृद्धि हुई है। 1987-88 में सहकारी चीनी के 30 कारखाने थे जिनके द्वारा कुल चीनी उत्पादन का 60 प्रतिशत उपलब्ध कराया गया था।

गन्ने का विकास :— गन्ने के उद्योग के विकास के लिए केन्द्रिय मंत्रालय का कारण गन्ने का प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ाना था। प्रति हेक्टेयर गन्ने का उत्पादन 1960-61 में 45 टन से बढ़कर 1970-71 में 48 टन और 2005-06 में बढ़कर 68 टन हो गया। उत्पादन की मात्रा को निर्धारित करने वाला दूसरा कारण गन्ने से सुक्रोस (Sucrose) की प्रतिशत प्राप्ति है। भारत में गन्ने का प्रति एकड़ उत्पादन और इससे सुक्रोस की प्राप्ति दोनों ही कम थे।

गुड़ के उत्पादन से प्रतियोगिता :— भारत में 100 लाख टन से 10 टन चीनी प्राप्त की जाती थी। परन्तु खांडसारी द्वारा 1 टन चीनी तैयार की जाती थी है। इस कारण गन्ने के खांडसारी और गुड़ की ओर प्रयोग से देश को चीनी उत्पादन में नुकसान होता है। अतः गुड़ के कारखाने में गन्ने के प्रयोग से चीनी के कारखानों की तुलना में 25 से 40 प्रतिशत सुक्रोस प्राप्त किया जाता है। अतः यह अनिवार्य है कि चीनी, गुड़ और खांडसारी के बीच कीमत प्रतियोगिता को दूर किया जाए। इन तीनों निकट स्थानापन्न वस्तुओं (close substitutes)